PSC ACADEMY

CHHATTISGARH

By RAKESH SAO

As per New Syllabus…

CGPSC PRE + MAINS

PAPER – 3 UNIT – 3

WWW.PSCACADEMY.IN

2ND Edition 2020

Printing and Publishing Rights with the Publishers….

No part of this book may be reproduced or copied in any form or by any means without the written permission of the publishers. Breach of this condition is liable for legal action.

Information and Facts given in this book is yet to be authenticated. Please refer and consist with original source.

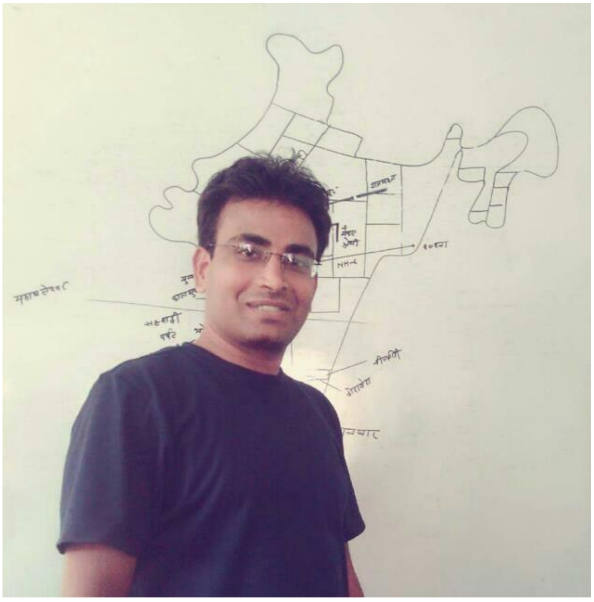

RAKESH SAO

CSE (BIT , Durg)

DIRECTOR (PSC ACADEMY)

छिंदकनाग वंश

- छिंदकनाग वंश (1023 – 1320 ई.)
- छिंदकनाग वंश के प्रमुख मंदिर
- महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
- मुख्य परीक्षा आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

- शासनकाल - 1023 – 1324 ई.
- संस्थापक - नृपतिभूषण (एर्राकोट शिलालेख) [CGPSC PRE 2003]
- अंतिम शासक - हरीशचंद्र देव
- राजधानी - भ्रमरकोट (बारसूर) [CGPSC ARTO 2012]
- उपराजधानी - चक्रकोट (चित्रकोट)
- उपाधि - भोगवतीपुरेश्वर [CGVyapam FI 2012]
- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव
- अधीनता - कल्चुरी वंश
- समकालीन - कल्चुरी वंश
- कुलदेवी - दंतेश्वरी देवी (मणिकेश्वरी देवी)
- दंतेश्वरी माता मंदिर - दंतेश्वरी देवी को **अन्नमदेव (काकतीय वंश)** दंतेश्वरी देवी के रूप में **दंतेवाड़ा** में प्रतिस्थापित करते है |

छिंदकनाग वंश के शासक

[CGPSC ADI 2017][CGPSC ARTO 2017]

क्र.	शासक	क्र.	शासक	क्र.	शासक
1	नृपतिभूषण	4	**सोमेश्वर I (सोमेश्वर देव)**	7	सोमेश्वर II (राजभूषण)
2	धारावर्ष	5	**कन्हरदेव**	8	जगदेवभूषण
3	मधुरांतक देव	6	**जयसिंह देव**	9	हरीशचंद्र देव

जानकारी के स्त्रोत

क्र.	शिलालेख	शासक	जानकारी
1	एर्राकोट शिलालेख (1023 ई.) (तेलगू शिलालेख) (आंध्रप्रदेश)	नृपतिभूषण	छिंदकनाग वंश के संस्थापक – नृपतिभूषण
2	राजपुर शिलालेख	मधुरांतक देव	उपराजधानी - चक्रकोट (चित्रकोट)
3	नारायणपाल शिलालेख	सोमेश्वर I की माता गुण्डमहादेवी	कल्चुरी वंश के शासक जाजल्लदेव I ने सोमेश्वर I को पराजित कर रतनपुर में सपरिवार कैद किया	
4	कुरुखपाल शिलालेख गढ़िया शिलालेख	सोमेश्वर I	सोमेश्वर I ने मधुरांतक देव को पराजित कर अपना पैतृक राज्य प्राप्त किया	
5	केशरपाल शिलालेख	जयसिंह देव	**गुढ़ियारी शिव मंदिर के निर्माता**
6	बारसूर शिलालेख	सोमेश्वर II की पत्नी गंगमहादेवी	
7	भैरमगढ़ शिलालेख	जगदेवभूषण	दंतेश्वरी (मणिकेश्वरी) माता का परम भक्त
8	टेमरा शिलालेख (1324 ई.)	हरीशचन्द्र देव	सती स्मारक लेख

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

राजधानी

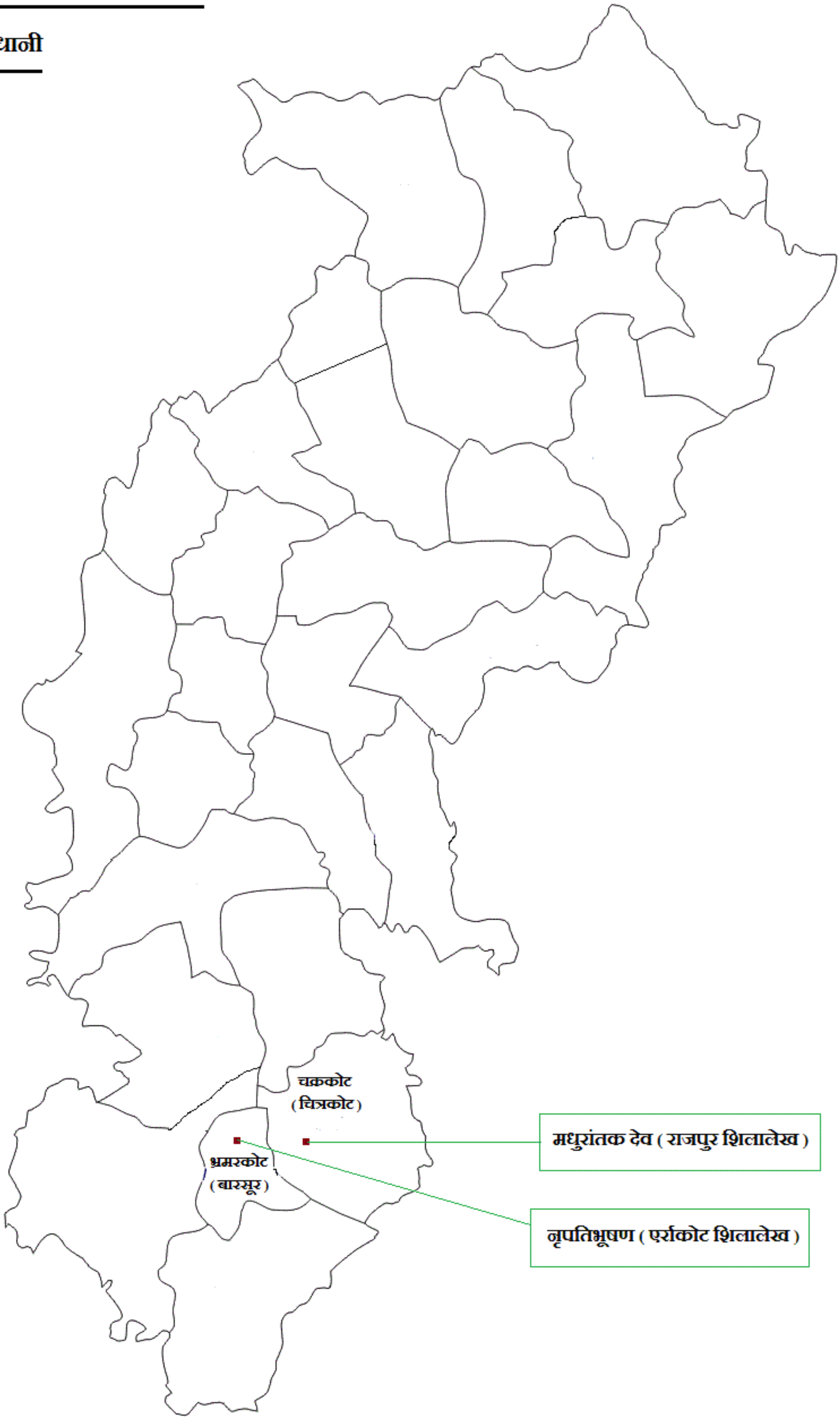

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

छिंदक नाग वंश के शासक

नृपतिभूषण
धारावर्ष
मधुरांतक देव

सोमेश्वर I (सोमेश्वर देव)
कन्हरदेव
जयसिंह देव

सोमेश्वर II (राजभूषण)
जगदेवभूषण
हरीशचंद्र देव

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

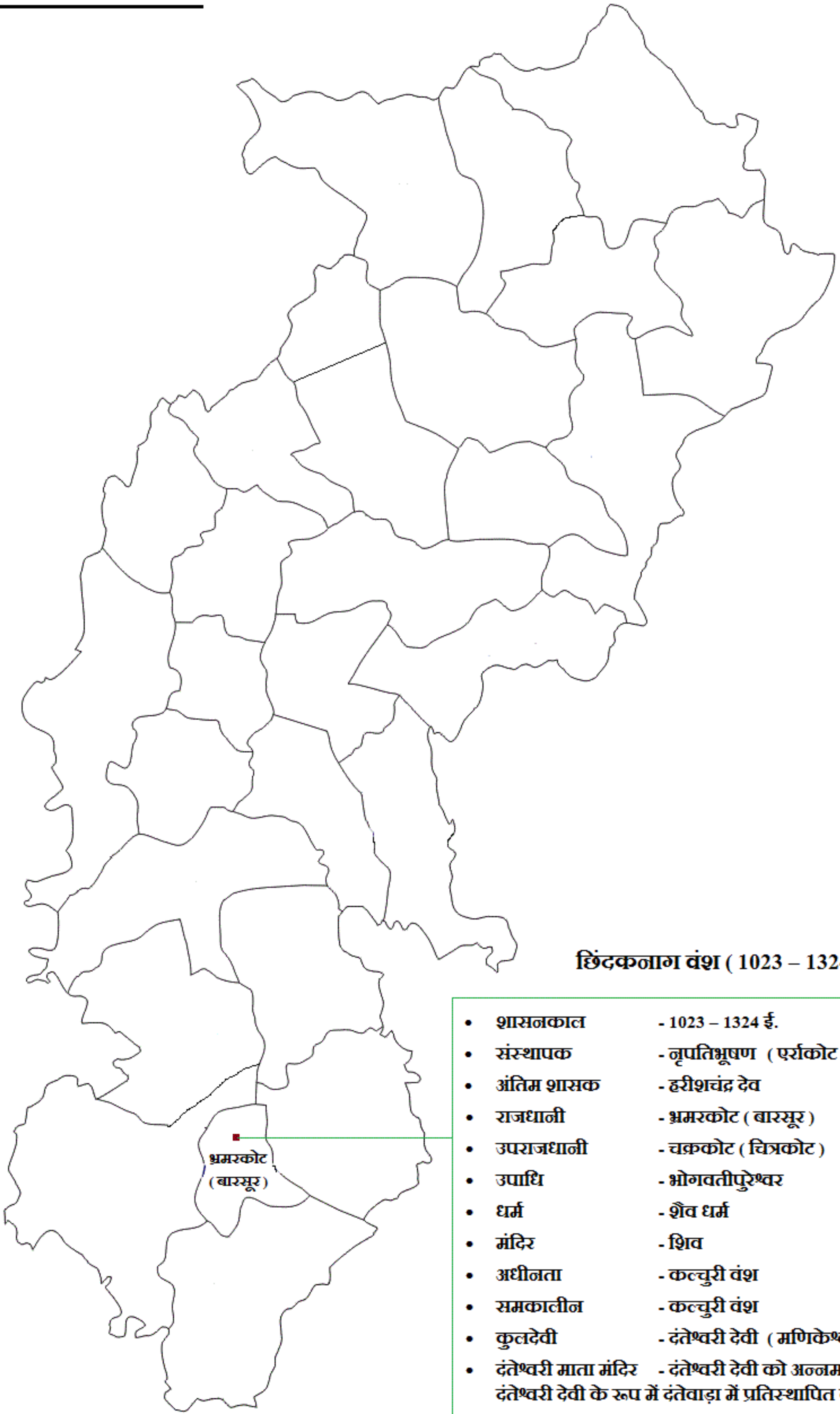

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

- शासनकाल - 1023 – 1324 ई.
- संस्थापक - नृपतिभूषण (एर्राकोट शिलालेख)
- अंतिम शासक - हरीशचंद्र देव
- राजधानी - भ्रमरकोट (बारसूर)
- उपराजधानी - चक्रकोट (चित्रकोट)
- उपाधि - भोगवतीपुरेश्वर
- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव
- अधीनता - कल्चुरी वंश
- समकालीन - कल्चुरी वंश
- कुलदेवी - दंतेश्वरी देवी (मणिकेश्वरी देवी)
- दंतेश्वरी माता मंदिर - दंतेश्वरी देवी को अन्नमदेव (काकतीय वंश) दंतेश्वरी देवी के रूप में दंतेवाड़ा में प्रतिस्थापित करते है |

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

छिंदक नाग वंश के शासक

नृपतिभूषण
धारावर्ष
मधुरांतक देव

सोमेश्वर I (सोमेश्वर देव)
कन्हरदेव
जयसिंह देव

सोमेश्वर II (राजभूषण)
जगदेवभूषण
हरीशचंद्र देव

छिंदकनाग वंश के प्रमुख शिलालेख

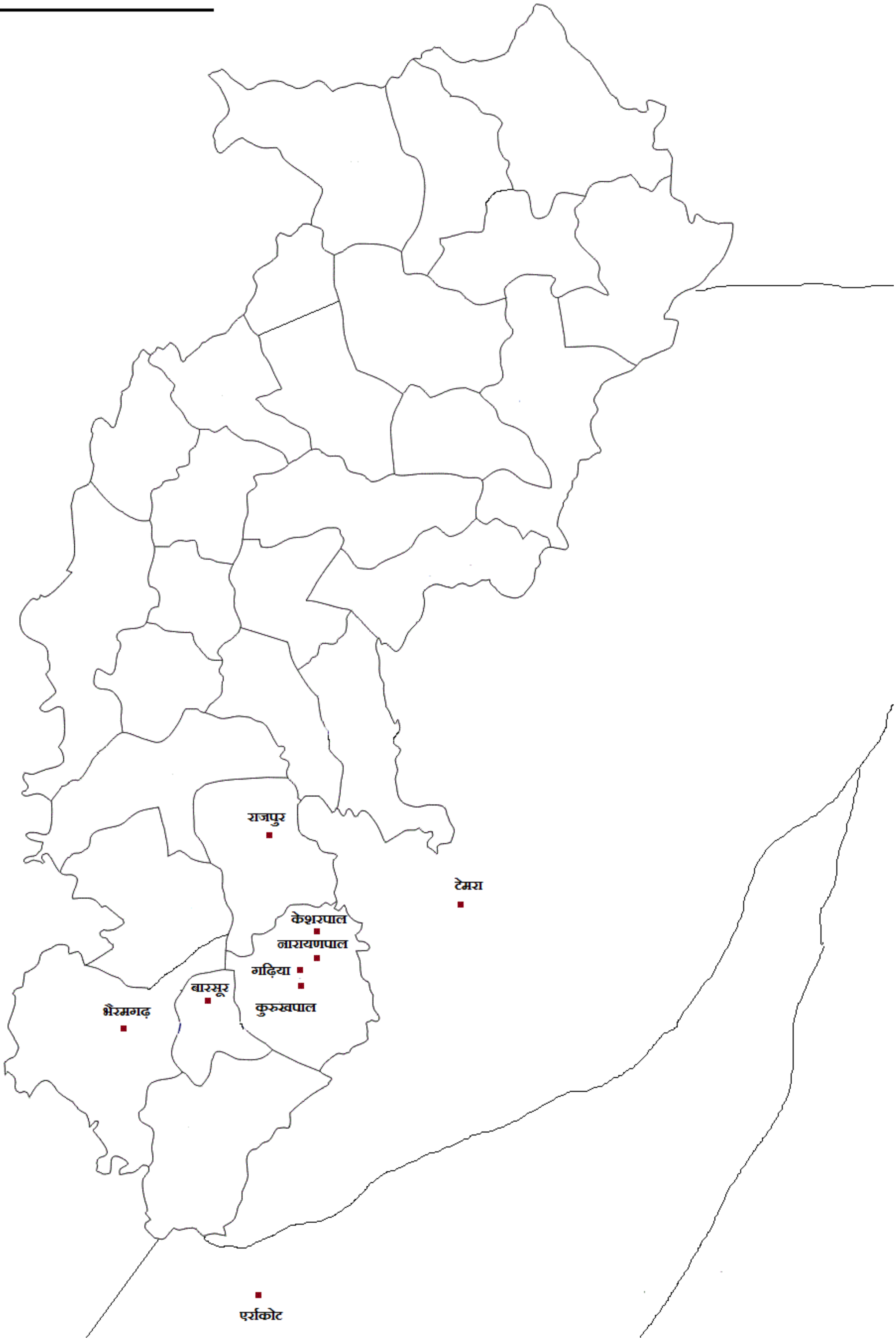

छिंदकनाग वंश के प्रमुख शिलालेख

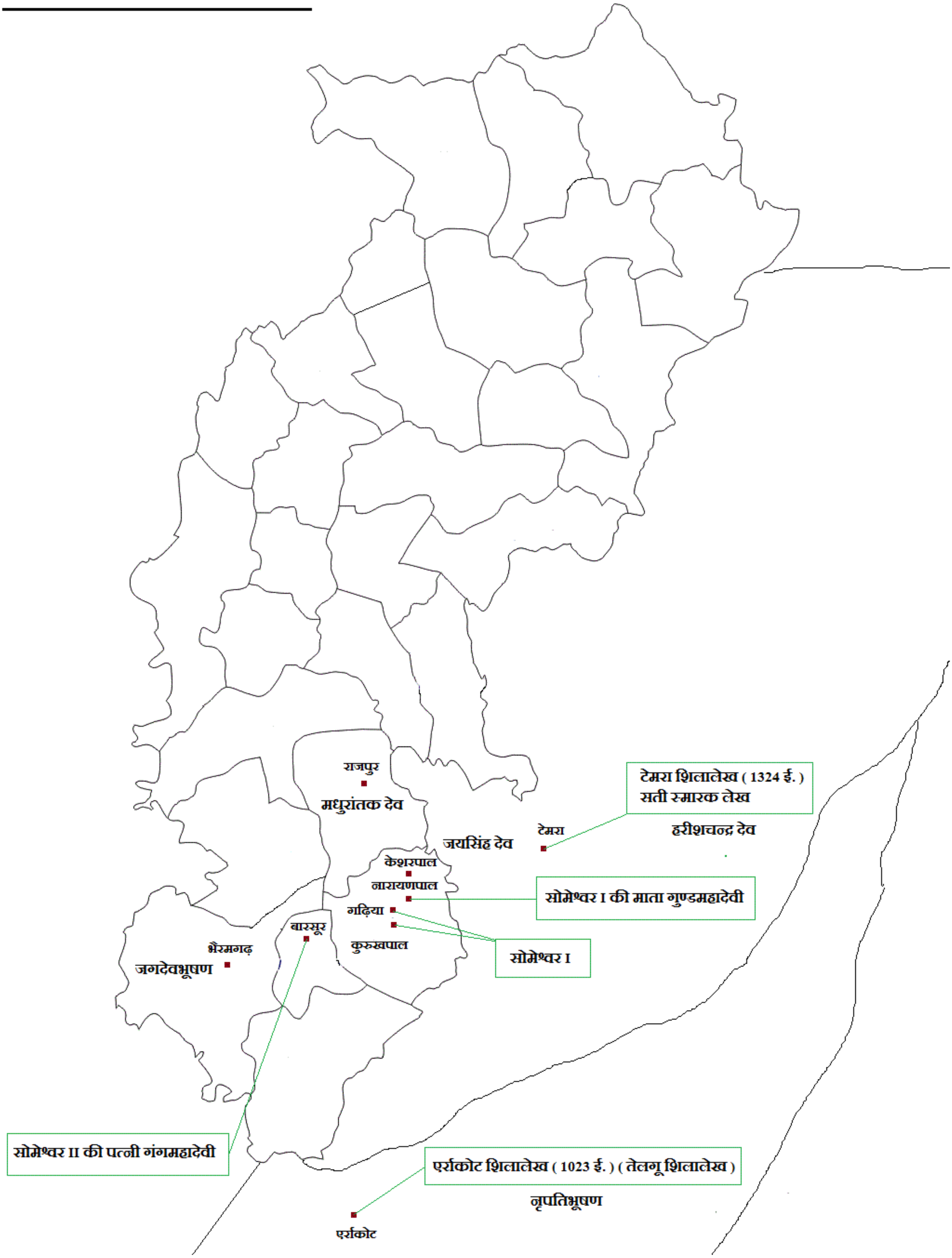

छिंदकनाग वंश के प्रमुख शिलालेख

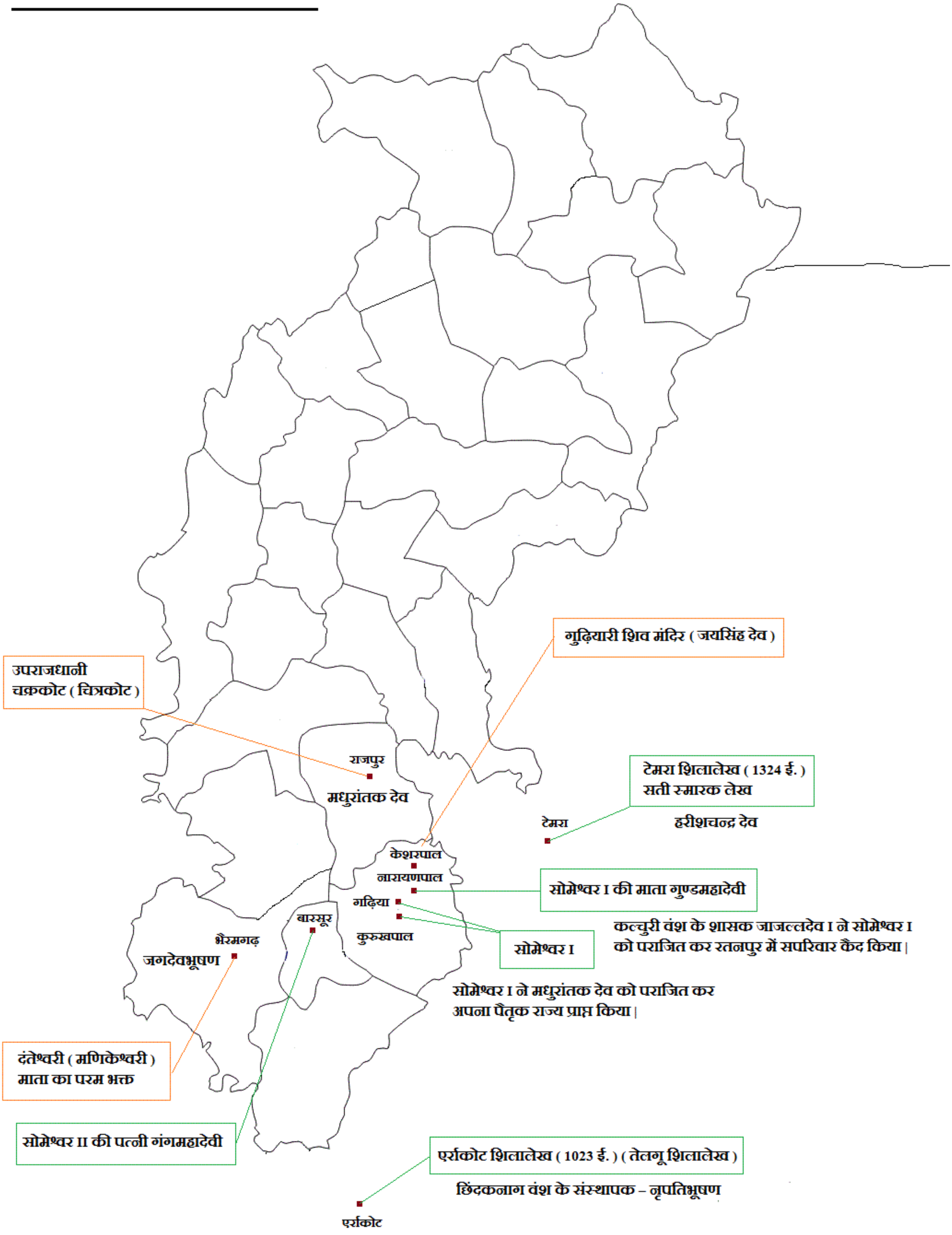

छिंदकनाग वंश के प्रमुख शासक

प्रमुख शासक	विशेष
नृपतिभूषण	▪ संस्थापक ▪ राजधानी - भ्रमरकोट (बारसूर)
धारावर्ष	▪ बारसूर का धरोहर - धारावर्ष ▪ धारावर्ष का सेनापति - चन्द्रादित्य ▪ **चन्द्रादित्य का बारसूर में स्थापत्य** (1) मामा – भांजा मंदिर (शिव मंदिर) (2) बत्तीसा मंदिर (32 खम्भों पर टिका शिव मंदिर) (3) चन्द्रादित्य महादेव मंदिर (4) युगल गणेश की विशाल प्रतिमा (5) चन्द्रादित्य सरोवर (बारसूर का विशाल तालाब)
मधुरांतक देव	▪ मधुरांतक का अर्थ - मदुरै मण्डल का विजेता ▪ धारावर्ष की मृत्यु के पश्चात् मधुरांतक देव ने **राजेन्द्र चोल** के सहयोग से शासन किया | ▪ **राजपुर शिलालेख** के अनुसार **मधुरांतक देव** ने बस्तर को 2 भागों में विभाजित किया (1) इन्द्रावती नदी के नीचे का भाग - भ्रमरकोट (बारसूर) (2) इन्द्रावती नदी के ऊपर का भाग - चक्रकोट (चित्रकोट)
सोमेश्वर I (सोमेश्वर देव)	▪ पिता - धारावर्ष ▪ माता - गुण्डमहादेवी ▪ पत्नी - धारणा देवी , सोमल देवी ▪ पुत्र - कन्हरदेव ▪ उपाधि - महाराजाधिराज ▪ युद्ध - सोमेश्वर I ने मधुरांतक देव को पराजित कर अपना पैतृक राज्य प्राप्त किया | परंतु शीघ्र ही कल्चुरी वंश के शासक जाजल्लदेव I ने सोमेश्वर I को पराजित कर रतनपुर में सपरिवार कैद किया | **बारसूर का युद्ध** ▪ युद्ध - सोमेश्वर I Vs जाजल्लदेव I (कल्चुरी वंश) ▪ विजेता - कल्चुरी वंश के शासक जाजल्लदेव I ने पराजित कर रतनपुर में सपरिवार कैद किया | **[CGVyapam PATWARI 2016][CGVyapam ASST. MANAGER 2015]** ▪ अनुग्रह - माता गुण्डमहादेवी के आग्रह पर जाजल्लदेव I ने छोड़ दिया | ▪ जानकारी - गुण्डमहादेवी का नारायणपाल शिलालेख
कन्हरदेव	**चक्रकोट का युद्ध (1145 ई.)** ▪ युद्ध - कन्हरदेव Vs जगपाल देव (कल्चुरी शासक पृथ्वीदेव II का सामंत) ▪ विजेता - जगपाल देव ▪ जानकारी - पृथ्वीदेव I का **आमोदा ताम्रपत्र**
जयसिंह देव	▪ निर्माण **- गुढ़ियारी शिव मंदिर** (केशरपाल शिलालेख)
सोमेश्वर II (राजभूषण)	▪ पत्नी - गंगमहादेवी ▪ शिलालेख - गंगमहादेवी का बारसूर शिलालेख
जगदेवभूषण	▪ भैरमगढ़ शिलालेख के अनुसार **दंतेश्वरी (मणिकेश्वरी)** माता का परम भक्त
हरीशचन्द्र देव	▪ अंतिम शासक ▪ **अन्नमदेव** - 1324 ई. काकतीय वंश के शासक **अन्नमदेव** ने छिंदक नागवंश के अंतिम शासक **हरीशचन्द्र देव** को पराजित कर **मंदोता** को राजधानी के रूप में स्थापित कर में **काकतीय वंश** की नींव रखीं | ▪ **चमेली देवी** - हरीशचन्द्र देव की पुत्री चमेली देवी ने काकतीय वंशीय शासक अन्नमदेव के साथ युद्ध किया | इसकारण चमेली देवी की वीरगाथा आज भी बस्तर क्षेत्र में प्रचलित है |

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

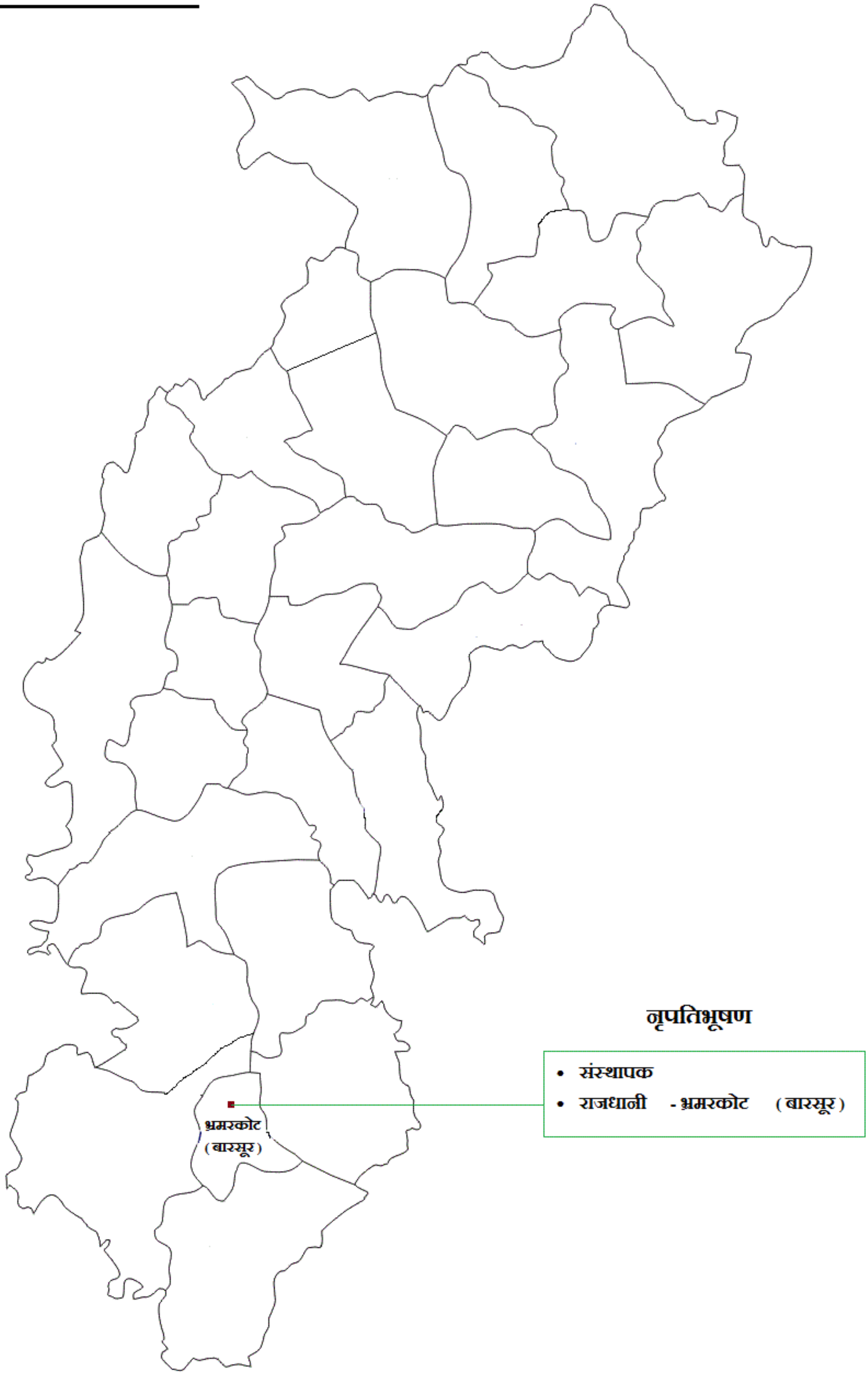

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

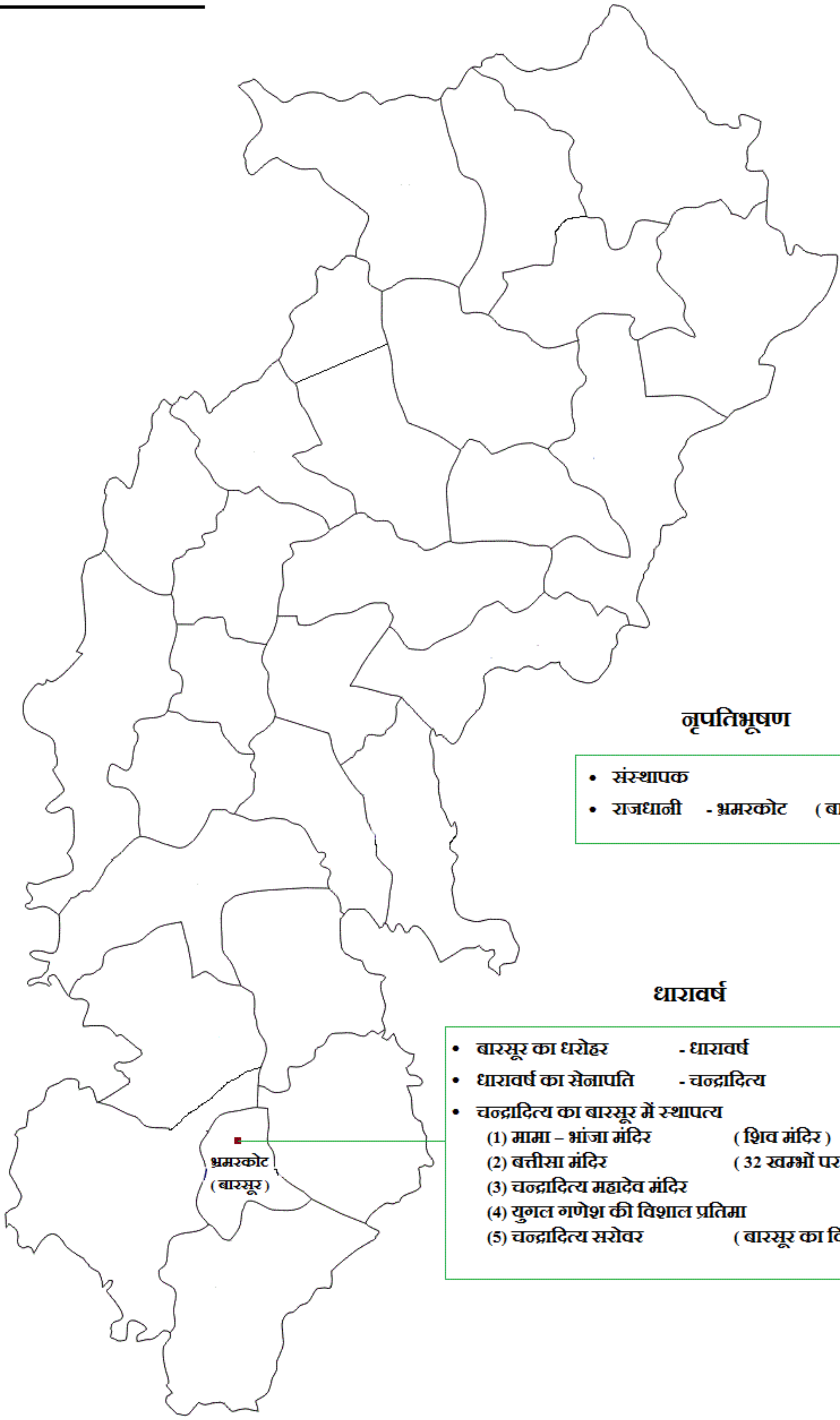

नृपतिभूषण

- संस्थापक
- राजधानी - भ्रमरकोट (बारसूर)

धारावर्ष

- बारसूर का धरोहर - धारावर्ष
- धारावर्ष का सेनापति - चन्द्रादित्य
- चन्द्रादित्य का बारसूर में स्थापत्य
  - (1) मामा – भांजा मंदिर (शिव मंदिर)
  - (2) बत्तीसा मंदिर (32 खम्भों पर टिका शिव मंदिर)
  - (3) चन्द्रादित्य महादेव मंदिर
  - (4) युगल गणेश की विशाल प्रतिमा
  - (5) चन्द्रादित्य सरोवर (बारसूर का विशाल तालाब)

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

मधुरांतक देव

- मधुरांतक का अर्थ - मदुरै मण्डल का विजेता
- धारावर्ष की मृत्यु के पश्चात् मधुरांतक देव ने राजेन्द्र चोल के सहयोग से शासन किया |
- राजपुर शिलालेख के अनुसार मधुरांतक देव ने बस्तर को 2 भागों में विभाजित किया
  (1) इन्द्रावती नदी के नीचे का भाग - भ्रमरकोट (बारसूर)
  (2) इन्द्रावती नदी के ऊपर का भाग - चक्रकोट (चित्रकोट)

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

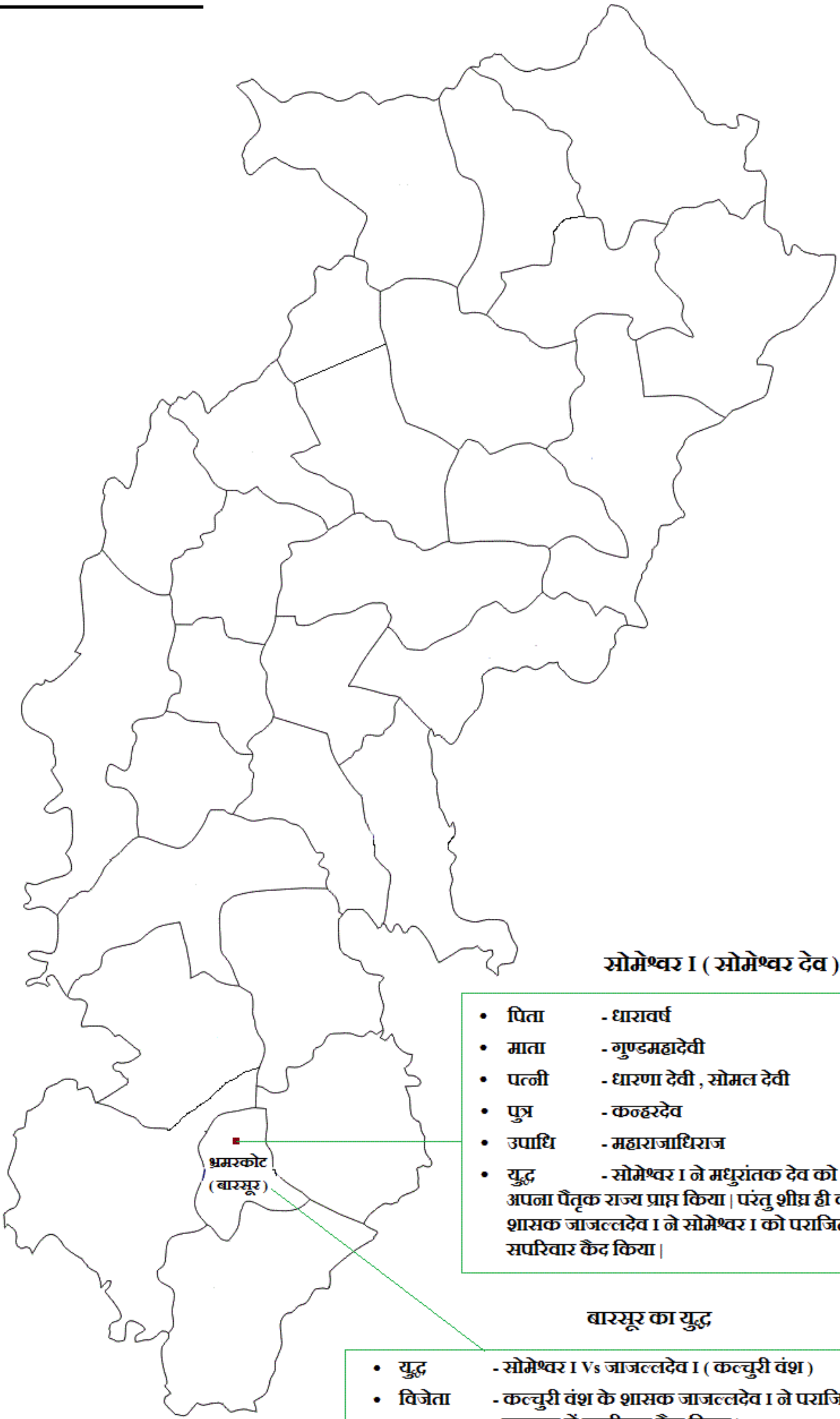

सोमेश्वर I (सोमेश्वर देव)

- पिता - धारावर्ष
- माता - गुण्डमहादेवी
- पत्नी - धारणा देवी , सोमल देवी
- पुत्र - कन्हरदेव
- उपाधि - महाराजाधिराज
- युद्ध - सोमेश्वर I ने मधुरांतक देव को पराजित कर अपना पैतृक राज्य प्राप्त किया | परंतु शीघ्र ही कल्चुरी वंश के शासक जाजल्लदेव I ने सोमेश्वर I को पराजित कर रतनपुर में सपरिवार कैद किया |

बारसूर का युद्ध

- युद्ध - सोमेश्वर I Vs जाजल्लदेव I (कल्चुरी वंश)
- विजेता - कल्चुरी वंश के शासक जाजल्लदेव I ने पराजित कर रतनपुर में सपरिवार कैद किया |
- अनुग्रह - माता गुण्डमहादेवी के आग्रह पर जाजल्लदेव I ने छोड़ दिया |
- जानकारी - गुण्डमहादेवी का नारायणपाल शिलालेख

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

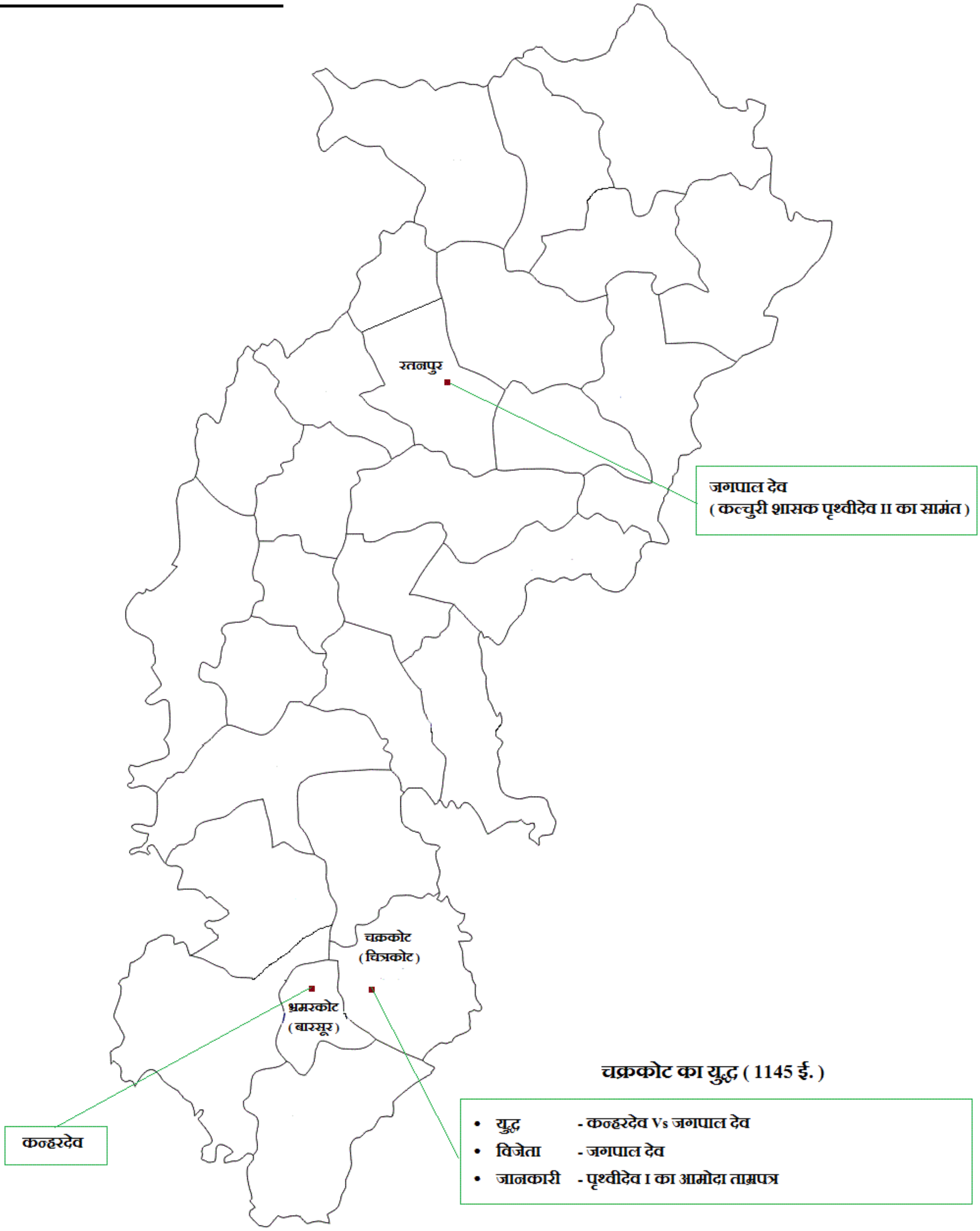

चक्रकोट का युद्ध (1145 ई.)

- युद्ध - कन्हरदेव Vs जगपाल देव
- विजेता - जगपाल देव
- जानकारी - पृथ्वीदेव I का आमोदा ताम्रपत्र

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.)

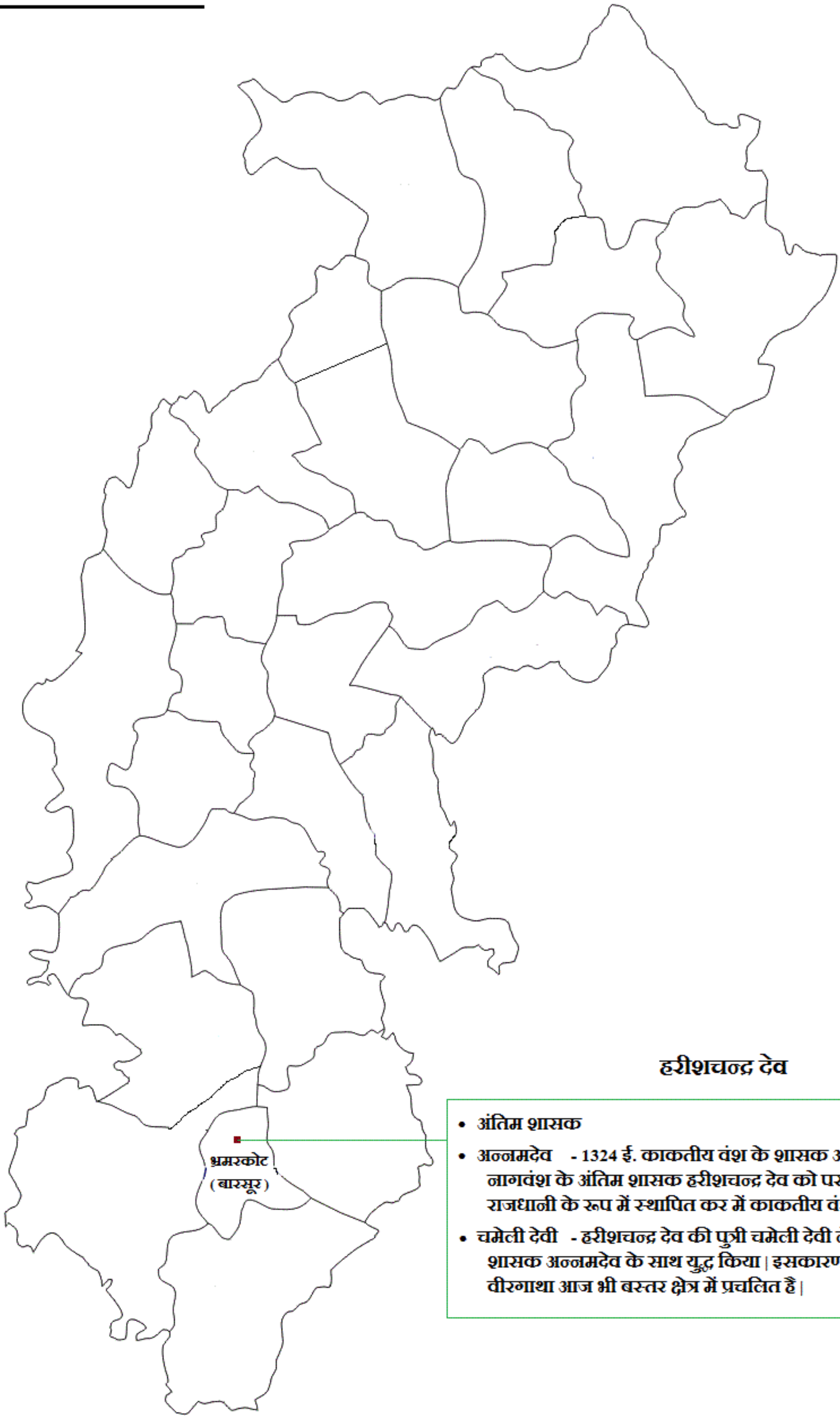

हरीशचन्द्र देव

- अंतिम शासक
- अन्नमदेव - 1324 ई. काकतीय वंश के शासक अन्नमदेव ने छिंदक नागवंश के अंतिम शासक हरीशचन्द्र देव को पराजित कर मंदोता को राजधानी के रूप में स्थापित कर में काकतीय वंश की नींव रखीं |
- चमेली देवी - हरीशचन्द्र देव की पुत्री चमेली देवी ने काकतीय वंशीय शासक अन्नमदेव के साथ युद्ध किया | इसकारण चमेली देवी की वीरगाथा आज भी बस्तर क्षेत्र में प्रचलित है |

छिंदकनाग वंश के प्रमुख मंदिर

मामा – भांजा मंदिर (बारसूर)

मामा – भांजा मंदिर (बारसूर)

जलाधारी शिवलिंग

- स्मारक - केंद्र संरक्षित स्मारक
- स्थान - बारसूर (जिला – दंतेवाड़ा)
- नदी तट - इन्द्रावती
- मंदिर - शिव मंदिर
- प्रतिमा - काला पत्थर का जलाधारी शिवलिंग
- निर्माण काल - 11 वीं – 12 वीं शताब्दी
- निर्माता - धारावर्ष के सामंत चंद्रादित्य (छिंदकनाग वंश)
- जनश्रुति - कहा जाता है कि 'मामा' और 'भांजा' दो शिल्पकार थे, जिन्होनें यह मंदिर सिर्फ एक दिन में ही पूरा करने का काम मिला था | उन दोनों ने मंदिर एक दिन में बना दिया था |
- विशेष - यह एक ऊंचा मंदिर है जिसके ऊपर दो तरफ मामा व भांजा की पत्थर की मूर्तियां बनायी गयी है |

चंद्रादित्य मंदिर (बारसूर)

चंद्रादित्य मंदिर (बारसूर)

चंद्रादित्य मंदिर (बारसूर)

जलाधारी शिवलिंग

- स्मारक - केंद्र संरक्षित स्मारक
- स्थान - बारसूर (जिला – दंतेवाड़ा)
- नदी तट - इन्द्रावती
- मंदिर - शिव मंदिर
- प्रतिमा - काला पत्थर का जलाधारी शिवलिंग
- निर्माण काल - 11 वीं – 12 वीं शताब्दी
- निर्माता - धारावर्ष के सामंत चंद्रादित्य (छिंदकनाग वंश)

युगल गणेश की विशाल प्रतिमा (बारसूर)

युगल गणेश विशाल प्रतिमा

युगल गणेश विशाल प्रतिमा

- स्मारक - केंद्र संरक्षित स्मारक
- स्थान - बारसूर (जिला – दंतेवाड़ा)
- नदी तट - इन्द्रावती
- प्रतिमा - मोनोलिथिक गणेश प्रतिमा
- निर्माण काल - 11 वीं – 12 वीं शताब्दी
- निर्माता - धारावर्ष के सामंत चंद्रादित्य (छिंदकनाग वंश)

बत्तीसा मंदिर

बत्तीसा मंदिर

दो गर्भ गृह वाला जोड़ा मंदिर

जलाधारी शिवलिंग

- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- स्थान - बारसूर (जिला – दंतेवाड़ा)
- जाने का मार्ग - राष्ट्रीय राजमार्ग – 63 जगदलपुर – गीदम मार्ग पर गीदम से 18 किमी. की दूरी पर
- नदी तट - इन्द्रावती
- मंदिर - शिव मंदिर
- प्रतिमा - काला पत्थर का जलाधारी शिवलिंग
- निर्माण काल - 11 वीं – 12 वीं शताब्दी
- निर्माता - धारावर्ष के सेनापति चंद्रादित्य (छिंदकनाग वंश)
- विशेष - दो मंदिरों से सम्बद्ध 32 स्तंभों पर स्थित भव्य शिव मंदिर

नारायण मंदिर (नारायणपाल)

नारायण मंदिर (नारायणपाल)

विष्णु प्रतिमा

- स्मारक - केंद्र संरक्षित स्मारक
- स्थान - नारायणपाल (चित्रकोट) (जिला – बस्तर)
- नदी तट - इन्द्रावती व नारंगी नदी के संगम पर स्थित मंदिर
- मंदिर - प्राचीन विष्णु मंदिर
- जलप्रपात - चित्रकोट जलप्रपात
- निर्माण काल - 11 वीं शताब्दी
- निर्माता - रानी मुमुंददेवी (छिंदकनाग वंश)
- विशेष - बस्तर का एकमात्र विष्णु मंदिर
- समकालीन - खजुराहो मंदिर के समकालीन मंदिर

शिव मंदिर (घुमरमुण्डपारा)

शिव मंदिर (घुमरमुण्डपारा)

जलाधारी शिवलिंग

- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- स्थान - घुमरमुण्डपारा (चित्रकोट) (जिला – बस्तर)
- जाने का मार्ग - राष्ट्रीय राजमार्ग – 63 जगदलपुर – चित्रकोट मार्ग पर चित्रकोट से 0.5 किमी. की दूरी पर
- नदी तट - इन्द्रावती नदी
- मंदिर - प्राचीन शिव मंदिर
- प्रतिमा - काला पत्थर का वर्गाकार जलाधारी शिवलिंग
- निर्माण काल - 11 वीं – 12 वीं शताब्दी
- निर्माता - छिंदकनाग वंश

गोरेश्वर महादेव मंदिर (छिंदगांव)

शिव मंदिर (छिंदगांव)

सफ़ेद शिवलिंग

द्वार पर गणेश की प्रतिमा

- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- स्थान - छिंदगांव (चित्रकोट) (जिला – बस्तर)
- जाने का मार्ग - राष्ट्रीय राजमार्ग – 63 जगदलपुर – चित्रकोट मार्ग पर जगदलपुर से 26 किमी. की दूरी पर
- नदी तट - इन्द्रावती
- मंदिर - प्राचीन शिव मंदिर
- प्रतिमा - सफ़ेद पत्थर से निर्मित शिवलिंग , गणेश की प्रतिमा
- निर्माण काल - 12 वीं शताब्दी
- निर्माता - छिंदकनाग वंश

गुढ़ियारी शिव मंदिर

गुढ़ियारी शिव मंदिर

जलाधारी शिवलिंग

- स्मारक - राज्य संरक्षित स्मारक
- स्थान - केशरपाल (जिला – बस्तर)
- जाने का मार्ग - राष्ट्रीय राजमार्ग – 30 कोण्डागांव – बस्तर मार्ग पर बस्तर से 23 किमी. पहले
- तालाब तट - गुढ़ियारी तालाब
- मंदिर - प्राचीन शिव मंदिर का अवशेष
- प्रतिमा - काला पत्थर का जलाधारी शिवलिंग , उमामहेश्वर प्रतिमा , गणेश की प्रतिमा
- निर्माण काल - 13 वीं शताब्दी
- निर्माता - जयसिंह देव (छिंदकनाग वंश)
- स्त्रोत - नागरी लिपि का केशरपाल प्रस्तर शिलालेख (राजा जयसिंह देव के नाम का उल्लेख)
- विशेष - केशरपाल प्रस्तर शिलालेख को **जगदलपुर पुरातत्व संग्रहालय** में रखा गया है |

ढोलकल गणेश मंदिर

ढोलकल पहाड़ी	ढोलकल गणेश मंदिर	ढोलकल गणेश प्रतिमा

- स्थान - ढोलकल पहाड़ी (बैलाडीला पहाड़ी) , फ़ारसपाल गांव , जिला – दंतेवाड़ा [CGVyapam FI 2017]
- पहाड़ी की ऊंचाई - 3000 फीट
- प्रतिमा की उंचाई - 3 फीट
- प्रतिमा संरचना - ग्रेनाइट पत्थर [CGVyapam FI 2017]
- निर्माण काल - 11 वीं शताब्दी
- निर्माता - **छिंदक नाग वंश** [CGVyapam FI 2017]

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. छिंदकनाग वंश के संस्थापक माने जाते है ?
(A) धारावर्ष (B) नृपति भूषण
(C) सोमेश्वर देव (D) कन्हर देव
[CGPSC PRE 2003]

उत्तर (B)

छिंदकनाग वंश (1023 – 1324 ई.(

- संस्थापक - नृपतिभूषण (एर्राकोट शिलालेख)
- अंतिम शासक - हरीशचंद्र देव
- राजधानी - भ्रमरकोट (बारसूर)
- उपराजधानी - चक्रकोट (चित्रकोट)
- उपाधि - भोगवतीपुरेश्वर
- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव
- अधीनता - कल्चुरी वंश
- समकालीन - कल्चुरी वंश
- कुलदेवी - दंतेश्वरी देवी (मणिकेश्वरी देवी)

2. छिंदक वंश की राजधानी थी :
(A) भ्रमरकोट (B) राजपुर
(C) नारायणपाल (D) केशरपाल
[CGPSC ARTO 2012]

उत्तर (A)

उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या देखिए |

3. छिंदक वंश की राजधानी थी :
(A) चक्रकोट (B) राजपुर
(C) नारायणपाल (D) केशरपाल

उत्तर (A)

उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या देखिए |

4. छिंदक वंश के अंतिम शासक थे :
(A) हरीशचंद्र देव (B) जगदेवभूषण
(C) जयसिंह देव (D) कन्हरदेव

उत्तर (A)

उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या देखिए |

5. भोगवतीपुरेश्वर की उपाधि धारण करने वाले शासक थे :
(A) फणि नाग वंश (B) छिंदक नाग वंश
(C) काकतीय वंश (D) कल्चुरी वंश
[CGVyapam FI 2012]

उत्तर (A)

उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या देखिए |

6. प्राचीन बस्तर के छिंदक नाग वंश के निम्नलिखित शासक थे –
(1) सोमेश्वर देव (2) कन्हर देव
(3) जयसिंह देव (4) परमेश्वर देव

(A) 1 , 2 , 3 (B) 1 , 2 , 3 , 4
(C) 2 , 3 , 4 (D) 1 , 3 , 4
[CGPSC ADI 2017]

उत्तर (A)

छिंदक नाग वंश के शासक

- नृपतिभूषण
- धारावर्ष
- मधुरांतक देव
- **सोमेश्वर I (सोमेश्वर देव)**
- **कन्हरदेव**
- **जयसिंह देव**
- सोमेश्वर II (राजभूषण)
- जगदेवभूषण
- हरीशचंद्र देव

7. निम्नलिखित में से कौन से शासक प्राचीन बस्तर के छिंदक नाग वंश के शासक थे ?
(1) सोमेश्वर देव (2) गोपाल देव
(3) कन्हर देव (4) जयसिंह देव

(A) 1 , 2 , 3 (B) 1 , 2 , 3 , 4
(C) 2 , 3 , 4 (D) 1 , 3 , 4
[CGPSC ARTO 2017]

उत्तर (D)

उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या देखिए।

8. छिंदक नाग वंश के निम्नलिखित शासकों को उनके शासनकाल के क्रम में व्यवस्थित कीजिए :

(1) सोमेश्वर देव (2) जगदेवभूषण
(3) कन्हर देव (4) जयसिंह देव

(A) 4 , 3 , 2 , 1 (B) 1 , 2 , 3 , 4
(C) 1 , 3 , 4 , 2 (D) 1 , 3 , 2 , 4

उत्तर (C)

उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या देखिए।

9. ढोलकल क्षेत्र , जो हाल ही में समाचार में था , किससे संबंधित नहीं है ?

(A) छिंदक नागवंशी (B) गणेश की मूर्ति
(C) नारायणपुर जिला (D) ग्रेनाइट पत्थर

[CGVyapam FI 2017]

उत्तर (C)

ढोलकल गणेश मंदिर

- स्थान - ढोलकल पहाड़ी
- जिला - दंतेवाड़ा
- पहाड़ी की ऊंचाई - 3000 फीट
- प्रतिमा की उंचाई - 3 फीट
- प्रतिमा संरचना - ग्रेनाइट पत्थर
- निर्माण काल - 11 वीं शताब्दी
- निर्माता - **छिंदक नाग वंश**

10. कल्चुरी शासक जाजल्यदेव प्रथम ने बस्तर के किस शासक को परास्त किया था ?

(A) अन्नमदेव (B) विलासतुंग
(C) सोमेश्वर देव (D) कन्हर देव

[CGVyapam ASST. MANAGER 2015]

उत्तर (C)

सोमेश्वर I (सोमेश्वर देव)

- पिता - धारावर्ष
- माता - गुण्डमहादेवी
- पत्नी - धारणा देवी , सोमल देवी
- पुत्र - कन्हरदेव
- उपाधि - महाराजाधिराज
- युद्ध - सोमेश्वर I ने मधुरांतक देव को पराजित कर अपना पैतृक राज्य प्राप्त किया। परंतु शीघ्र ही कल्चुरी वंश के शासक जाजल्लदेव I ने सोमेश्वर I को पराजित कर रतनपुर में सपरिवार कैद किया।

बारसूर का युद्ध

- युद्ध - सोमेश्वर I Vs जाजल्लदेव I
- विजेता - कल्चुरी वंश के शासक जाजल्लदेव I ने सोमेश्वर I को पराजित कर रतनपुर में सपरिवार कैद किया।
- अनुग्रह - माता गुण्डमहादेवी के आग्रह पर जाजल्लदेव I ने छोड़ दिया।
- जानकारी - गुण्डमहादेवी का नारायणपाल शिलालेख

11. इस राज्य के कल्चुरी वंश के इनमें से किस राजा ने बस्तर के नागवंशीय शासक सोमेश्वर को पराजित किया था ?

(A) जाजल्यदेव प्रथम (B) रत्नदेव प्रथम
(C) पृथ्वीदेव (D) जाजल्यदेव द्वितीय

[CGVyapam PATWARI 2016]

उत्तर (A)

उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या देखिए।

---------------------- ALL THE BEST ----------------------

मुख्य परीक्षा आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

Question 1. **बस्तर के छिंदक नागवंशी शासक सोमेश्वर देव प्रथम के विजयों का वर्णन कीजिए |**
(अंक : 2 , शब्द सीमा : 30) **[CGPSC MAINS 2018]**

गुण्डमहादेवी का नारायणपाल शिलालेख के अनुसार सोमेश्वर I ने मधुरांतक देव को पराजित कर अपना पैतृक राज्य प्राप्त किया | परंतु शीघ्र ही कल्चुरी वंश के शासक जाजल्लदेव I ने सोमेश्वर I को पराजित कर रतनपुर में सपरिवार कैद किया | माता गुण्डमहादेवी के आग्रह पर जाजल्लदेव I ने छोड़ दिया |

Question 2. **मामा – भांजा मंदिर पर एक लेख लिखिए | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)**

केंद्र संरक्षित स्मारक की सूची में सम्मिलित मामा – भांजा मंदिर छिंदकनाग वंश के शासक धारावर्ष के सामंत चंद्रादित्य के द्वारा इन्द्रावती के तट पर बारसूर में किया गया | यह मंदिर नागर शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है | यह एक शिव मंदिर है | यह एक राज्य संरक्षित स्मारक है |

मूल्यांकन – मामा – भांजा मंदिर का प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही अपनी वास्तुकला की पृष्ठभूमि के लिए भी अद्वितीय है | यह मंदिर छत्तीसगढ़ की सुंदरता का प्रतीक है | इसका छत्तीसगढ़ पर्यटन में अतुलनीय योगदान है | छत्तीसगढ़ राजस्व में इसका महत्वपूर्ण योगदान है |

RAKESH SAO

CSE (BIT , Durg)

DIRECTOR (PSC ACADEMY)

FOR COMPLETE NOTES VISIT

WWW.PSCACADEMY.IN

STEPS TO DOWNLOAD PDF NOTES

(1) www.pscacademy.in

(2) CLICK ON "DOWNLOAD"

(3) CLICK ON "PSC ACADEMY SPECIAL"

PSC ACADEMY
(RAIPUR)

2016 TOP 10 SELECTIONS

NISHANT TIWARI
CGPSC 2016
7TH POST RANK

PUNESHWAR VERMA
STATE ENGG SERVICES
2ND RANK

CHANDRAKANT BAGHEL
FOOD INSPECTOR
10TH RANK

SURESH PIPRE
ACF 2016
3RD RANK (CAT)

CGPSC NEW BATCHES START FROM 1ST OCTOBER

CGPSC PRE / CG VYAPAM — TIME - 5PM TO 7PM
CGPSC MAINS — TIME - 7PM TO 9PM

DOWNLOAD ALL STUDY MATERIALS FROM
WWW.PSCACADEMY.IN

PSC ACADEMY
BESIDE DENA BANK, GOL CHOWK,
ROHANIPURAM, D.D. NAGAR,
NEAR NIT RAIPUR, RAIPUR (C.G.)

CONTACT 9827112187
9302766733

RAKESH SAO
CSE (BIT , Durg)
DIRECTOR